International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

ज्ञानदेव देशमुख
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. अनामिका पाण्डेय
प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 200 शिक्षकों (100 पुरूष एवं 100 महिला) का चयन कर उन पर डॉ. एस.के. मंगल की 'शिक्षक समायोजन मापनी' का प्रशासन किया गया तथा विभिन्न क्षेत्रों में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' एवं समग्र समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' एवं समग्र समायोजन महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया जबकि महिला शिक्षकों का 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' पुरूष शिक्षकों से बेहतर पाया गया।

मुख्य शब्द – माध्यमिक स्तर, पुरूष एवं महिला शिक्षक, समायोजन

शिक्षा सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से ही संपूर्ण राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है तथा एक विकसित राष्ट्र बन सकता है। देश का विकास आज के

विद्यार्थियों पर निर्भर है। अतः इस दृष्टि से शिक्षा का सशक्त एवं प्रभावी होना अतिआवश्यक है।

शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी होने में शिक्षक की मुख्य भूमिका होती है। शिक्षक वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों पर अपना प्रभाव डालता है। शिक्षक ही राष्ट्रीय एवं भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर विश्व व्यवस्था तथा मानवजाति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज व देश की उन्नति उत्तम व प्रभावशाली शिक्षकों पर निर्भर है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षक ही विद्यालय पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति होता है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें आदि शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, परंतु जब तक उनमें अच्छे शिक्षक द्वारा जीवन शक्ति प्रविष्ट नहीं की जाती, तब तक ये निरर्थक होती हैं। शिक्षक के व्यक्तित्व से प्रेरित होकर छात्र–छात्राएँ विचारात्मक एवं व्यवहारात्मक धरातल पर उन सद्गुणों को प्राप्त करते हैं, जिनका महत्वपूर्ण योगदान उनके जीवन के विकास में परिलक्षित होता है। इस दृष्टि से शिक्षक के कार्य एवं व्यवहार का विशेष महत्व है।

अतः कहा जा सकता है कि देश के विकास के लिये शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक के बिना विद्यालय, पाठ्यक्रम, शैक्षणिक सामग्री सब अपूर्ण हैं। विद्यालय की उन्नति अथवा विकास के लिये उचित पाठ्यक्रम, श्रेष्ठ पाठ्य पुस्तकें, शैक्षणिक सामग्री, उच्चतम शिक्षा साधन तथा उपयुक्त विद्यालय भवनों की आवश्यकता होती है परंतु उससे कहीं ज्यादा आवश्यकता है उपयुक्त अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की, वे ही शिक्षा पद्धति को चलाते हैं। अच्छे शिक्षकों के अभाव में किसी भी देश की शिक्षा पद्धति निर्जीव और निस्तेज हो जाती है। देश के सारे शिक्षाशास्त्री, विद्वान, राजनीतिज्ञ और प्रशासक यह स्वीकार करते हैं कि देश जिस संकट कालीन दौर से गुजर रहा है उसमें अध्यापक ही उसे सम्बल प्रदान कर सकते हैं। व्यक्ति शिक्षा व्यवसाय में उच्च आदर्शों के साथ प्रवेश करता है, किंतु वर्तमान जीवन जटिल होने से शिक्षकों पर अत्यधिक जिम्मेदारी आ गई है, जिसके कारण वे तनावग्रस्त हो जाते हैं और उनका समायोजन उचित प्रकार से नहीं हो पाता है जिसका प्रभाव उनके शिक्षण पर भी पडता है

इसलिए आवश्यक है कि शिक्षकों का समायोजन भली–भांति हो जिससे उनका शिक्षण कार्य प्रभावी हो सके। यदि शिक्षकों को आने वाली की समस्याओं का उचित समाधान हो जाये तो परिवार, विद्यालय व समाज में उनका समायोजन अच्छी तरह होगा एवं वे और अधिक प्रभावशाली शिक्षक बन सकेगें। अतः प्रस्तुत शोधकार्य में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यंत सामयिक प्रतीत होता है, क्योंकि शिक्षक ही भविष्य निर्माता एवं राष्ट्र निर्माता हैं, यदि वह स्वयं उचित प्रकार से समायोजित होंगे तो इसका सीधा प्रभाव उनके शिक्षण एवं विद्यार्थियों पर भी पड़ेगा। शिक्षको के समायोजन का अत्यधिक महत्व होने के कारण ही इस शोध समस्या का चयन प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है।

इस विषय से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **राव, शेखर तथा लक्ष्मी (2003)** ने भावी शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन किया तथा पाया कि सभी शिक्षकों का समायोजन स्तर औसत है शिक्षकों के लिंग, विषय तथा योग्यता का उनके समायोजन स्तर पर कोई प्रभाव नहीं है। **गौतम (2006)** ने माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत विवाहित तथा अविवाहित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अंतर नहीं था। माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के समायोजन में कोई अंतर नहीं था। **जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007)** ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि अध्यापकों के लिंग का उनकी शिक्षण दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। **कुमार, अखिलेश (2015)** ने भोपाल जिले के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्तः ज्ञात हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मध्य 'सामाजिक–मनौभौतिक समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' एवं 'समग्र' समायोजन में सार्थक अंतर नहीं

पाया गया जबकि शिक्षकों व शिक्षिकाओं के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया तथा शिक्षिकाओं में 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' शिक्षकों से बेहतर पाया गया परंतु शिक्षकों में 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' शिक्षिकाओं से बेहतर पाया गया। **सिंह, संगीता (2017)** ने विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के समायोजन का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निष्कर्तः ज्ञात हुआ कि विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के मध्य 'सामाजिक–मनौभौतिक समायोजन', 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' एवं 'समग्र' समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन का तुलनात्मक करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन का तुलनात्मक करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रो में समायोजन में सार्थक अतंर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन में सार्थक अतंर नहीं है।

उपकरण :–

'शिक्षक समायोजन मापनी' [TAI] – डॉ. एस.के. मंगल

विधि :–

सर्वप्रथम बैतूल जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से 200 शिक्षकों (100 पुरूष एवं 100 महिला) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा करके चयनित शिक्षकों पर डॉ. एस.के. मंगल की 'शिक्षक समायोजन मापनी' का प्रशासन किया गया एवं इस मापनी के सभी क्षेत्रों का अलग–अलग फलांकन किया गया एवं इन सभी का योग करके समग्र समायोजन ज्ञात किया गया। शिक्षक समायोजन मापनी के प्राप्तांकों के आधार पर मॉस्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

सारणी क्रमांक 01

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन' संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	97.78	18.93	6.14	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	81.64	18.26		

स्वतंत्रता के अंश – 198   0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन' के मध्यमान क्रमशः 97.78 व 81.64 पाये गये जिनके मध्य 16.14 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 6.14 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के

विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन' पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

सारणी क्रमांक 02

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	116.27	23.99	2.74	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	106.95	24.10		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' के मध्यमान क्रमशः 116.27 व 106.95 पाये गये जिनके मध्य 9.32 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.74 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

सारणी क्रमांक 03

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	69.68	14.79	2.75	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	75.31	14.16		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' के मध्यमान क्रमशः 69.68 व 75.31 पाये गये जिनके मध्य 5.63 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.75 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया तथा महिला शिक्षकों का 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', पुरूष शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

सारणी क्रमांक 04

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	108.84	19.99	4.19	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	97.17	19.37		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' के मध्यमान क्रमशः 108.84 व 97.17 पाये गये जिनके मध्य 11.67 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 4.19 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन', महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

सारणी क्रमांक 05

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	49.77	8.70	4.25	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	54.66	7.55		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' के मध्यमान क्रमशः 49.77 व 54.66 पाये गये जिनके मध्य 4.89 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 4.25 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' में सार्थक अंतर पाया गया तथा महिला शिक्षकों का 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि', पुरूष शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

सारणी क्रमांक 06

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षक समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
पुरूष	100	442.34	65.94	2.95	0.01 स्तर पर सार्थक
महिला	100	415.73	61.28		

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम सारणी मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन के मध्यमान क्रमशः 442.34 व 415.73 पाये गये जिनके मध्य 26.61 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.95 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समग्र समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का समग्र समायोजन, महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 12, Decemberl - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पनाओं का सत्यापन –

परिकल्पना – 1 : माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणामों (सारणी क्रमांक 01–05) से स्पष्ट होता है कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों के 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 6.14, 2.74, 2.75, 4.19, 4.25 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक हैं, अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2 – माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन संबंधी तुलनात्मक परिणामों (सारणी क्रमांक 06) से स्पष्ट होता है कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.95 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.60 की अपेक्षाकृत अधिक है, अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी उक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य 'संस्था के शैक्षिक एवं सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन', 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन', 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन' एवं 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि' में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का 'संस्था के शैक्षिक एवं

सामान्य पर्यावरण के साथ समायोजन', 'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक–शारीरिक समायोजन' एवं 'व्यक्तिगत जीवन में समायोजन', महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया जबकि महिला शिक्षकों का 'व्यावसायिक संबंधों में समायोजन' तथा 'वित्तीय समायोजन एवं कार्य संतुष्टि', पुरूष शिक्षकों से बेहतर पाया गया अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समायोजन के उपरोक्त सभी क्षेत्रों पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समग्र समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया तथा पुरूष शिक्षकों का समग्र समायोजन, महिला शिक्षकों से बेहतर पाया गया, अर्थात माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के समग्र समायोजन पर लिंग भिन्नता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची//

❖ अग्रवाल, जे.सी (1972) **विद्यालय प्रशासन**, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली

❖ अस्थाना, मधु एवं वर्मा, किरणबाला (1996) : **व्यक्तित्व मनोविज्ञान,** मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 86

❖ अस्थाना, विपिन (1999) : **मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मूल्यांकन,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम् संस्करण

❖ भाई योगेन्द्रजीत : **विकासात्मक मनोविज्ञान,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चतुर्थ संस्करण

❖ भार्गव, महेश (1997) : **आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,** हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा, ग्यारहवां संस्करण

❖ भार्गव, तृप्ति एवं भार्गव, विवेक (1991) : **मानव व्यवहार का मनोविज्ञान,** हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, कचहरी घाट, आगरा, प्रथम संस्करण

❖ भार्गव, ऊषा (1993) : **किशोर मनोविज्ञान,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण

- भटनागर, ए.बी. (2003) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इन्टर कॉलेज, मेरठ, चतुर्थ संस्करण
- भटनागर, सुरेश (2007) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** आर. लाल बुक डिपो, निकट गर्वनमेन्ट कॉलेज, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 190
- **जायसवाल, विजय एवं नायक, संतोष कुमार (2007)** "प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं आध्यापिकों के शिक्षण दक्षता पर उनके समायोजन के प्रभाव का अध्ययन", भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली, जुलाई 2007, पेज 113 से 123
- **कुमार, अखिलेश (2015)** "भोपाल जिले के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों व शिक्षिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबंध, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल
- **पटेल, जिग्नेश (2008)** विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की द्विभूमिका एवं अनुकूलन की समस्याओं का अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
- **सिंह, संगीता (2017)** "विवाहित एवं अविवाहित कार्यरत शिक्षिकाओं के समायोजन का अध्ययन", अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल